खानाबदोश नटों के जीवन का यथार्थ दस्तावेज : शैलूष

डॉ. मालोजी अर्जुन जगताप,
सहायक प्राध्यापक,हिंदी विभाग,
सांगोला कॉलेज सांगोला
९९२१४७३८०७,

सारांश –

हिंदी साहित्य में शिवप्रसाद जी के कथा साहित्य का अर्थ-सन्दर्भ अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। वे एक गहन सर्जनात्मक अन्तर्दृष्टि रखनेवाले और संवेदनशील है, जिसे भारतीय इतिहास-संस्कृति की विवेक प्रक्रिया ने कई भीतरी-बाहरी चुनौतियों को झेलकर प्रतिफलित किया है। शिवप्रसाद सिंह की सृजन-चेतना और उसमें निहित इतिहास की यातना-वेदना, नियति का एक ऐसा जीवन्त, अर्थवान और धड़कता हुआ रचना संसार है जिसमें अतीत वर्तमान से संवाद करता है, सांस्कृतिक संवेदना मानवीय अनुभव तत्कालीन यथार्थ को अभिव्यक्त करती है। शिवप्रसाद सिंह के लिए कथा की 'विधा' महज माध्यम है, जिसका लक्ष्य है इतिहास और कहानी की संवेदना के भीतर से समाज, संस्कृति और इतिहास की अन्तःप्रेरणाओं से साक्षात्कार कराना।

'शैलूष' शिवप्रसाद सिंह का नटों के संघर्षपूर्ण जीवन, लोकजीवन एवं लोकसंस्कृति का चित्रण करनेवाला श्रेष्ठ उपन्यास है। शैलूष में नटों के अभावग्रसत जीवन, रीति-रिवाज, विवाह परंपरा, अंधविश्वास, सामाजिक सद्भावना तथा नारी सम्मान आदि का सूक्ष्म चित्रण किया हैं। उपन्यास की कथा का केंद्र सावित्री है, जो नट कबील के सरदार जुड़ावन की पत्नी है। वह नई सोच तथा दूरदृष्टि रखनेवाली नारी है। जमीदार घुरफेंकन के अत्याचार, हिंसा के शिकार नटों के जीवन एवं संघर्ष का विस्तार से वर्णन किया गया है। बदलते परिवेश का प्रभाव भी नटों पर दिखाई देता है। उन्होंने अब गाँव-गाँव घुमना बदं कर दिया है। शिकार करना, नाचना, खेल दिखाना, शरीर बेचना बंद किया है। खेती करनी शुरु की हैं। घुरूफेंकन की पराजय और नट की जीत आदिवासियों के विकास के किरण रूप में आए हैं। अत: हम कह सकते हैं कि नटो की कबीलाई जीवन एवं संस्कृति को चित्रित करने में यह उपन्यास सफल हुआ है।

बीज शब्द – नट,शैलूष,खानाबदोश,आदिवासी उपन्यास,आदिवासी आदिवासी साहित्य

प्रस्तावना-

शिवप्रसाद सिंह उन हिंदी कथाकारों में से हैं जो अपने ही बनाए मार्ग को परिवर्तित कर नए रुप में स्थापित करते हैं। उनके उपन्यास 'अलग अलग वैतरणी', 'गली', 'नीला चाँद', और 'शैलूष' उनकी इसी रचनात्मक शक्ति का परिचायक हैं। 'शैलूष' आदिवासी नटों के यायावर जीवन पर अधारित लिखी श्रेष्ठ कृति हैं। इस उपन्यास का प्रकाशन 1989 में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली द्वारा हुआ।

'शैलूष' शिवप्रसाद सिंह के अनुभूति का नीचोड़ हैं। इस संदर्भ में शिवप्रसाद सिंह कहते हैं, ''यायावर जीवन, जरायम पेशा, खानाबदोश नटों की जिंदगी मैं दस वर्ष की उम्र से आज तक न केवल देखता रहा बल्कि वह दु:ख स्वप्न की तरह मेरे दिमाग पर छायी रही।''[1] इसी अनुभूत पीड़ा को शैलूष में वाणी देंने का कार्य लेखक ने किया हे। 'शैलूष' में नटों में आ रहे परिवर्तन आर्थिक दुरावस्था, विद्रोह, नई चेतना, संघर्ष, रीति-रिवाज, लोकगीत, नारी का साहस, गैर आदिवासियों से नटों का संबंध, धार्मिक सद्भावना आदि का अत्यंत यथार्थ रुप में चित्रण किया गया हैं। लोकसंस्कृति पर आधारित इस कृति में नट जनजाति के जीवन के अंतर्विरोध, आर्थिक विपन्नता, शारीरिक संबंधो की जड़ता, नई चेतना, संघर्ष और शोषण आदि विभिन्न संदर्भो का प्रस्तुतिकरण हुआ हैं। खानाबदोश नटों के जीवन के संघर्षो को लेखक ने परत-दर-परत उकेरकर शैलूष में संजोया हैं। शैलूष के संदर्भ में भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं, ''संपूर्ण उपन्यास नटों के जीवन और उनके जीवनयापन संबंधित संघर्ष पर आधारित हैं। अवश्य ही लेखक ने नटों के जीवन को समीप से देखा हैं तभी वह अनेक रहन-सहन से लेकर उनकी संस्कृति तक का विश्वसनीय चित्र उपस्थित करने में सफल हो सका हैं।''[2] नटों के यायावरी जीवन में घटनेवाली तमाम बाह्यशक्तियों जमींदार, पुलिस, प्रशासन राजनेता आदि के दबाव, अत्याचार, अन्याय और छल कपट को लेखक ने सावित्री, जुड़ावन, रुपा, लल्लूनट आदि पात्रों के माध्यम से जीवित कर दिया हैं।

'शैलूष' का केंद्र चंदौली तहसील का 'रेवतपुर' गाँव और गाँव के जुड़ावन कबीले के नट हैं। कथा का केंद्र भूमिहीन नटों

को सरकार द्वारा चालीस एकड़ भूमि प्रदान की गई हैं। इस भूमि पर पिछले बीस साल से जुड़ावन कबीला निवास करता हैं लेकिन गाँव के जमींदार घुरुफेंकन तीवरी इस जमीन को पाना चाहता हैं, इस जमीन के लिए अनेक नटों का खून बहता हैं। जमीन के लिए नटोंद्वारा किया गया संघर्ष इस उपन्यास को प्रमुख कथावस्तु हैं। रेवतीपुर गाँव के नट जो जरायम पेशा जनजाति हैं। उनका जीवन अभावों से भरा हुआ हैं। रोजी रोटी के लिए उन्हे नाच गाना, अलग अलग शारीरिक कसरते, खेल दिखाने पड़ते थे। सब्बो याने सावित्री जो ब्राह्मण कन्या थी उसने जुड़ावन नट से प्रेमविवाह किया था। सावित्री ने अपना घर बार छोड़कर नटों के मुक्त जीवन को अपनाया था। जुड़ावन के लिए नटनी बन जाती हैं। नटों के विकास एवं परिवर्तन के लिए सावित्री पूरा जीवन समर्पित करती हैं और अंत में उनके लिए जान भी दे देती हैं। सावित्री याने सब्बो मौसी के कारण चोरी, शिकार, भीख माँगना, देह बेचना आदि कार्य नटों ने बंद कर दिए हैं। सब स्वाभिमान के साथ जीवन जीना चाहते हैं। सावित्री से नट कबीला, पुलिस, कलेक्टर सभी प्रभावित हैं। जुड़ावन कबीले के नट तो उसके अनुमति के बिना एक भी कदम आगे नही चलते हैं। वह सावित्री से ड़रते भी और उसके ज्ञान का सम्मान भी करते हैं।

जमीदार घुरफेंकन ब्राह्मण हैं। नटों और हरिजनों को सरकारने बाटी जमीन उसीके पूर्वजों की हैं। उस जमीन को हड़पने के लिए अनेक पैंतरे अपनाता हैं। पहले बशीरा नटों के कबीलों को बुलाता हैं। उसे लगता हैं नट ही नटों को काट सकता हैं। ब्राह्मण टोली, नट, गुंडे, पुलिस सभी प्रकार के प्रयास नटों को जमीन से खदेड़ने के लिए करता हैं लेकिन सब्बो मौसी की चतुरता तथा नटो के शोर्य से अंत तक उसे जमीन नहीं मिलती। जमीनदारी तो धीरे-धीरे खत्म होती जा रही हैं लेकिन जमीनदारों का अहंकार नहीं खत्म हो रहा हैं। पुलिस अधिकारी प्रतापसिंह कहता हैं, ‘‘आपके पूर्वज रहे होंगे राजा रईस उन्होंने जमींदारो के दिनों में कलेक्टर, इंस्पेक्टर और उनके सारे अमला को मांस-मदिरा खिला-पिलाकर, नजराना या डलिया देकर अपने मन मुताबिक सब कुछ करा लिया होगा। लेकिन अब यह सब नहीं चलेगा।’’[3] यह वाक्य खत्म होती जमींदारी का प्रमाण हैं। इस उपन्यास में नासीर, प्रतापसिंह, कलेक्टर को आदिवासियों के सहायक रुप में दिखाया हैं। जो आदिवासियों के विकास के लिए प्रयास करते हैं। इनके यह एक प्रमाणिक प्रयत्न एक छोटी सी क्रांति ला सकती हैं। जमीदार के हर पैंतरे का जबाब सब्बो मौसी के पास हैं। वह कृष्ण की सेवक हैं उपर से शांत और अंदर से विद्रोही, आग हैं। वह बुरी परंपरा, शोषण, अत्याचार, लाचारी का विरोध करती हैं। लेकिन हक लिए कभी नटों को हाथयार उठाने से भी रोकती नहीं हैं। वह धर्म-भेद एवं जातिभेद का विरोध करती हैं सभी हरिजनों, बशीरा के मुसलमान नटों को भी साथ-साथ चलने को कहती हैं। नौजादिक, मानिक, ननकू, अमिरात, रुपा, तहिरा, माला, सूरज, वासुदेव सभी उसके आदेशो का पालन करते हैं। सावित्री भी अपने को टनी कहनें का गर्व महसूस करती हैं। सब्बो मौसी नारी की स्वतंत्रता और आत्म रक्षा को महत्वपूर्ण मानती हैं। रुपा तहिरा को स्वतंत्रता देती हैं, हसिंया चलना सिखाती हैं। वह रुपा के संदर्भ कहती हैं, ‘‘हमारी रुपा केवल नट कन्या नहीं हैं। वह अत्याचार के लिखाफ जेहाद बोलनेवाली पलिता हैं।’’[4] शैलूष में नारी को महत्त्व दिया हैं। नटों में नारी प्रधान परिवार होते हैं। इसलिए पहले मान ‘नथिया’ बंजारिन को दिया जाता हैं। नट सावित्री को भी नथिया का ही स्थान देते हैं।

‘शैलूष’ उपन्यास में सब्बो मौसी के कथा के साथ-साथ मानिक-रुपा, करीम-सलमा, अमिरत ताहिरा, सुधाकर-रेवती, जुड़ावन-सावित्री आदि की पेरमकथाएँ हैं। कलेक्टर सारस्वत मौसी को मानता हैं। शैलूष में नटों को अधिक विद्रोही एवं साहसी स्वाभीमानी दिखाया हैं। डॉ. रामविनोद सिंह शैलूष के संदर्भ में लिखते हैं ‘‘नटों की जिंदगी के अंतर्विरोध उसकी सांस्कृतिक चेतना में आते हुए बदलाव, रीति-रिवाज, लोकगीत, लोकविश्वास, आर्थिक, विषमता और अभाव के कारण टूटती नैतिकता, सामाजिक जीवन के साथ निजी जीवन की झॉंकिया, बाह्य समाज से नटों के संबंध उनके जुझारू ओर विलासी स्वभाव का बड़ा ही सूक्ष्म विश्लेषण किया गया हैं।’’[5] लेखक विस्थापित नटों के जीवन से बेचैन होता दिखाई देता हैं। परिणामस्वरूप वह उन्हें स्थापित करने का भी प्रयास करता हैं। ‘जुड़ावन’ नट कबीले का सरदार हैं लेकिन उसका प्रधान रुप विकसित नहीं हुआ हैं इसलिए तो मौसी तक बुजुर्ग लल्लू नट से विचार विमर्श करती हैं। मौसी ने नटों को स्वाभिमान, सयंम की शिक्षा दी हैं। गंदी राजनीति आदिवासी कबीलों और उनकी संस्कृति को खत्म कर रही हैं इस पर सावित्री कहती हैं, ‘‘आज हमारा आदिवासी गरीब, गरीब से भी नीचे यानी दरिद्र होता जा रहा हैं। क्यों मानिक, ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए हैं कि तुम्हारे नेता दों मुहे सांप की तरह दोनों को गटकना चाहते हैं मालिक को भी और मजदूर को भी।’’[6] मौसी इन गंदे राजनेताओ के चाल में नटों को कभी फसनें नहीं देती हैं। घुरुफेंकन 40 एकड़ जमीन हड़पने के लिए नटों की झोपड़ियाँ जला देता हैं। ताहिरा जैसी नट कन्याओं पर बलत्कार करवाता हैं। यह घुरुफेंकन

तिवारी पूँजीपतियों का प्रतिनिधित्व करता हैं। उसमें शोषक प्रवृत्ति, लालच, अनैतिकता, कपट, नीचता और भ्रष्टता कूट-कूटकर भरी हुई हैं। जो ताहिर अली, जीतू कसाई, करिमन, बशीर, नजीर, छबीला जैसे गुंडों के माध्यम से नटों के जीवन को ध्वस्त करने का प्रयास करता हैं।

निष्कर्ष -

'शैलूष' में नटों के संघर्ष के साथ साथ लोकजीवन और लेक संस्कृति का अत्यंत सूक्ष्म एवं सटीक चित्रण मिलता हैं। संयुक्त परिवार, विविध मान्यताएँ, विवाह परंपरा, नारी सम्मान, व्यसनाधीनता, अंधविश्वास, अशिक्षा, यौन-संबंध, वेशभूषा, रीति-रिवाज, स्वाभिमान, स्वच्छंद जीवन का भी चित्रण हुआ हैं। नटों के पूर्वजो के इतिहास को भी चित्रित किया हैं। लोकगीतों का अधिक प्रयोग हुआ हैं इसमें से धानरोपनी के समय, विवाह, लड़ाई के समय गीत गाते नटों को दिखाया हैं। जैसे रुपा और मानिक के विवाह समय लड़कियाँ हाथ में डालकर यह गीत गाती हैं|